लौहित्य साहित्य सेतु: सहयोगी विद्वानों द्वारा पुनरीक्षित अर्धवार्षिक द्विभाषिक ई-पत्रिका
वर्ष: 2 संख्या: 2 ; जनवरी-जून, 2021

मणि मोहन की कविताएँ

हाशिया

रोशनी की कथा में
दूर तक पसरा है
अंधियारा
गनीमत है
कि हाशिए पर ही सही
इस अंधेरे से
लड़ तो रहा है
मिट्टी का एक दीया।

मिट्टी के दीये

देखो ! मोल-भाव मत करना
उस गरीब से
जो रोशनी से चमचमाते
अंधकार में बैठकर
मिट्टी के दीये बेच रहा है

देखो ! मोल-भाव मत करना
कि मिट्टी से ज़्यादा अनमोल
कुछ भी नहीं
इस संसार में।

रोशनी

इस रोशनी में
थोड़ा-सा हिस्सा उसका भी है
जिसने चाक पर गीली मिट्टी रखकर
आकार दिया है इस दीपक को

इस रोशनी में
थोड़ा-सा हिस्सा उसका भी है
जिसने उगाया है कपास
तुम्हारी बाती के लिए
थोड़ा-सा हिस्सा उसका भी
जिसके पसीने से बना है तेल

इस रोशनी में
थोड़ा-सा हिस्सा
उस अँधेरे का भी है
जो दीये के नीचे
पसरा है चुपचाप।

लौ

काँपती लौ
एक दीपक की
गहन तम को
डराती सी
हराती सी
काँपती लौ
एक दीपक की....

संपर्क-सूत्र :
विजयनगर, सेक्टर-बी
गंज बासौदा, मध्यप्रदेश
पिन--464221
ई-मेइल : profmanimohanmehta@gmail.com